International Journal of Research in Finance and Management

P-ISSN: 2617-5754
E-ISSN: 2617-5762
IJRFM 2022; 5(2): 222-225
Received: 22-07-2022
Accepted: 26-08-2022

**डॉ. बबिता वैदिक**
एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र, ठाकुर बीरी सिंह महाविद्यालय टूंडला फिरोजाबाद, हरियाणा, भारत

**Correspondence**
**डॉ. बबिता वैदिक**
एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र, ठाकुर बीरी सिंह महाविद्यालय टूंडला फिरोजाबाद, हरियाणा, भारत

# सार्वजनिक व्यय का अर्थव्यवस्था के परिपेक्ष्य में एक अध्ययन

## डॉ. बबिता वैदिक

**सारांश**
**उद्देश्य:** सार्वजनिक व्यय का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव की समीक्षा करना।
**प्रक्रिया:** जब सार्वजनिक व्यय से लोगों की क्रय शक्ति में वृद्धि होती है तो इससे कुछ लोग कार्य करने की इच्छा कम हो जाती है। वह लोग सोचते हैं कि सामान्य जीवन स्तर के अनुरूप उनके पास पर्याप्त आय हो गई तथा उन्हें और अधिक कार्य करने की जरूरत नहीं है। जिससे सार्वजनिक व्यय का कार्य करने की इच्छा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है वास्तव में अधिकांश लोग अपने वर्तमान जीवन स्तर से संतुष्ट नहीं होते और वह अपने जीवन स्तर को और अधिक ऊंचा बनाना चाहते हैं तथा उनके कार्य करने की इच्छा समाप्त नहीं होती है इसका प्रभाव यह भी होता है कि वास्तविक व्यय की बचत करने की इच्छा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । तथा सामान्य रूप से सार्वजनिक व्यय से मिलने वाला संभावित लाभ का कार्य करने एवं बचत करने की इच्छा पर अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ता बल्कि इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है। सार्वजनिक व्यय के द्वारा धनी एवं गरीब के मध्य व आय के वितरण में व्याप्त असमानता को दूर किया जा सकता है। अमीरों पर प्रगतिशील दर से करारोपण करके उससे प्राप्त धन को गरीबों के कल्याण पर व्यय किया जाता है प्रोफ़ेसर पीगू का मत है कि "कोई भी कार्य जो गरीबों की वास्तविक आय के कुल भाग में वृद्धि करता हो सामान्यता आर्थिक कल्याण में वृद्धि करता है "समाज की बढ़ती विषमता को दूर करने का कार्य करारोपण तथा सार्वजनिक व्यय द्वारा पूरा किया जा सकता है।
**परिणाम:** प्रोफेसर जे.के.मेहता के शब्दों में सार्वजनिक व्यय एक दो धार वाला अस्त्र है। यह समाज की बहुत भलाई कर सकता है,लेकिन यदि यह अबुद्धिमतापूर्ण ढंग से किया जाए, तो बहुत हानि भी पहुंचा सकता है।

**कूट शब्द:** आय, व्यय, सार्वजनिक व्यय, अर्थव्यवस्था, कर

## प्रस्तावना
सार्वजनिक व्यय व्यक्तिगत व्यय की भांति राज्यों की क्रियाओं का आदि एवं अंत, दोनों ही है। प्राचीन समय में राज्य का कार्य क्षेत्र सीमित होने से सार्वजनिक व्यय का महत्व कम था। वर्तमान समय में इसका महत्व बढ़ गया है। राजकीय व्यय के आकार से ज्ञात किया जाता है कि राज्य का मानव के जीवन में क्या स्थान है। सार्वजनिक व्यय का राजस्व में उतना ही महत्व है,जितना कि उपभोग का अर्थशास्त्र में है। सार्वजनिक वित्त की सभी क्रियाएं इसी के चारों ओर चक्कर लगाती है। राजस्व की जितनी भी क्रियाएं है उनका संबंध व्यक्तियों के धन को प्राप्त करके राज्य के उपयोग में लाना है जिससे उपभोक्ताओं को सेवा प्रदान की जा सके वर्तमान समय में सार्वजनिक व्यय का महत्व दिन पर दिन बढ़ने लगा है किसी भी देश की अर्थव्यवस्था पर सार्वजनिक व्यय का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। सार्वजनिक व्यय रोजगार,धन के वितरण एवं उत्पादन को प्रभावित करके अर्थव्यवस्था में वांछित परिवर्तन ला सकता है। इससे उत्पत्ति के साधनों का उद्योगों में वितरण भी प्रभावित होता है सार्वजनिक व्यय द्वारा प्रभावोंत्पादक मांग में वृद्धि होती है जिससे विनियोग व रोज़गार में वृद्धि होती रहती है तथा आशा जनक अर्थव्यवस्था का विकास होता है।

सार्वजनिक व्यय उचित दिशा में हो रहे हैं या नहीं इस बात की जांच करने के लिए हमें सार्वजनिक व्यय के देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना पड़ेगा यह प्रभाव बहुसंख्यक हो सकते हैं। सार्वजनिक व्ययों के देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों का हम निम्न शीर्षको के अंतर्गत अध्ययन कर सकते हैं।

**१. सार्वजनिक व्यय का उत्पादन पर प्रभाव**

सार्वजनिक व्यय देश के उत्पादन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह उत्पादन की प्रकृति व मात्रा को प्रभावित करके आय रोज़गार पर भी प्रभाव डालता है। डाल्टन के अनुसार "करारोपण अकेले उत्पादन को नियंत्रित कर सकता है,और सार्वजनिक व्यय को अकेले उसमें निश्चय ही वृद्धि करनी चाहिए। सार्वजनिक व्यय से उत्पादन में अधिक से अधिक वृद्धि होनी चाहिए। सार्वजनिक व्यय के उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभावों को दो भागों में बांटा जा सकता है।

**(i) प्रत्यक्ष प्रभाव**

**(ii) अप्रत्यक्ष प्रभाव**

**सार्वजनिक व्यय का उत्पादन पर प्रत्यक्ष प्रभाव**

**(a) प्रत्यक्ष रूप से उद्योगों की स्थापना कर के**

आज प्राय सभी देशों में किसी न किसी आधार पर सरकार स्वयं कुछ उद्योगों की स्थापना का उत्तरदायित्व लेती है। और इस प्रकार वह इन उद्योगों की स्थापना पर व्यय करके उत्पादन में वृद्धि कर सकती है।

**(b) अनुदान एवं आर्थिक सहायता**

सरकार उद्योगों को अनुदान एवं आर्थिक सहायता देकर भी उत्पादन वृद्धि में प्रत्यक्ष योगदान दे सकती है। इस प्रकार की सहायता प्राय: नवीन उद्योगों हानि पर चलने वाले उद्योगों या विदेशी प्रतिस्पर्धा से कुप्रभावित उद्योगों को प्रदान की जाती है।

**(c) औद्योगिक अनुसंधान**

सरकार औद्योगिक अनुसंधान पर व्यय कर के भी उत्पादन वृद्धि में सहयोग दे सकती है। औद्योगिक अनुसंधान से ऐसे उपाय विकसित किए जा सकते हैं जिससे उत्पादन में नवीन तकनीकों का प्रयोग करके उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि की जा सके। सरकार अपने व्यय से देश की प्रभावशाली मांग में वृद्धि करके उत्पादन में वृद्धि को प्रेरित कर सकती हैं।

**सार्वजनिक व्यय का उत्पादन पर अप्रत्यक्ष प्रभाव**

**(A) काम तथा बचत करने की शक्ति पर प्रभाव**

व्यय मनुष्य की काम करने का बचत करने की शक्ति को कई तरह से प्रभावित कर सकता है।

**(a) क्रय शक्ति में वृद्धि**

सार्वजनिक व्यय द्वारा क्रय शक्ति का हस्तांतरण राज्य से जनता में विभिन्न रूपों से होता है। जिससे अनेक व्यक्तियों की क्रय शक्ति (आय) बढ़ती है। पेंशन भते, बेकारी व बीमारी के समय मिलने वाला लाभ,वस्तुओं और सेवाओं पर किया गया व्यय आदि ऐसे व्यय हैं जिससे व्यक्तियों की क्रय शक्ति (आय) में वृद्धि होती है। इस प्रकार व्ययो में वृद्धि होने से व्यक्तियों का जीवन स्तर ऊंचा उठता है और उनके शारीरिक तथा मानसिक कल्याण में उन्नति होती है। फल स्वरुप उनकी कार्य क्षमता में वृद्धि होती है जो दीर्घकाल में उत्पादन को बढ़ाती है।

**(b) वस्तुओं और सेवाओं का प्रबंध करना**

राज्य अपने व्यय द्वारा निर्धन व्यक्तियों को वस्तुओं व सेवाओं प्रत्यक्ष रूप में प्रदान करके इनकी कार्य क्षमता को बढ़ा सकता है। राज्य इस प्रकार की सेवाओं की व्यवस्था या तो निशुल्क या सस्ते मूल्य पर करता है जैसे निशुल्क शिक्षा,सस्ते मकान,निशुल्क चिकित्सा आदि।

**(c) सुविधाएं प्रदान करना**

राज्य अपने व्यय द्वारा कुछ ऐसी सुविधाएं प्रदान कर सकता है जिनकी सहायता से व्यक्ति अधिक अच्छी प्रकार के उत्पादन कर सकता है। रेल,सड़कें,सिंचाई विद्युत आदि के विकास पर वह प्रत्यक्ष रुप से उत्पादन को प्रोत्साहित करता है।

**(B) कार्य करने एवं बचत करने की इच्छा पर प्रभाव**

सार्वजनिक व्यय का कार्य करने एवं बचत करने की इच्छा पर क्या प्रभाव पड़ता है इस में कठिनाई इसलिए उपस्थित होती है क्योंकि इसके लिए हमें सार्वजनिक व्यय के प्रति लोगों की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया को जानना होता है इसके अध्ययन के लिए हम सार्वजनिक व्यय को दो भागों में विभाजित करेंगे वास्तविक व्यय का प्रभाव एवं संभावित व्यय का प्रभाव

**(a) वास्तविक व्यय का कार्य करने एवं बचत करने की इच्छा पर प्रभाव**

जब सार्वजनिक व्यय से लोगों की क्रय शक्ति में वृद्धि होती है तो इससे कुछ लोग कार्य करने की इच्छा कम हो जाती है। वह लोग सोचते हैं कि सामान्य जीवन स्तर के अनुरूप उनके पास पर्याप्त आय हो गई तथा उन्हें और अधिक कार्य करने की जरूरत नहीं है। जिससे सार्वजनिक व्यय का कार्य करने की इच्छा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है वास्तव में अधिकांश लोग अपने वर्तमान जीवन स्तर से संतुष्ट नहीं होते और वह अपने जीवन स्तर को और अधिक ऊंचा बनाना चाहते हैं तथा उनके कार्य करने की इच्छा समाप्त नहीं होती है इसका प्रभाव यह भी होता है कि वास्तविक व्यय की बचत करने की इच्छा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है ।

**(b) संभावित व्यय का प्रभाव**

सामान्य रूप से सार्वजनिक व्यय से मिलने वाला संभावित लाभ का कार्य करने एवं बचत करने की इच्छा पर अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ता बल्कि इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है लोगों को किसी क्षेत्र में सरकारी व्यय के माध्यम से सहायता

का आश्वासन दिया जाता है। वह सरकार पर निर्भर हो जाते हैं और उनकी कार्य करने की इच्छा कम हो जाती है और जब कार्य करने की इच्छा कम हो जाती है तो बचत करने की इच्छा कम हो जाती है।

**(C) आर्थिक साधनों की स्थानांतरण पर प्रभाव -:**

सार्वजनिक व्यय का आर्थिक साधनों के उपयोग पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है आर्थिक साधनों का स्थानांतरण दो प्रकार से हो सकता है प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष स्थानांतरण प्रत्यक्ष स्थानांतरण में राज्य व्यक्तियों के धन का उपयोग स्वयं करता है क्योंकि यदि राज्य ऐसा ना करें तो इस धन का उपयोग व्यक्तियों द्वारा विभिन्न तरीकों से हो। अतः राज्य धन का प्रत्यक्ष स्थानांतरण करके व्यक्तियों की उत्पादन शक्ति को बढ़ाता है सरकार की ओर से जो भी वह सुरक्षा,नागरिक प्रशासन,समाज सेवा आदि पर किया जाता है वह संसाधनों का प्रत्यक्ष स्थानांतरण होता है।

अप्रत्यक्ष स्थानांतरण जब सरकार स्वयं सार्वजनिक व्यय ना करके देश में एक ऐसे उपयुक्त वातावरण का निर्माण कर दें कि उससे लोग स्वयं ही अपनी पूंजी को किसी दिशा की ओर उत्साहित करने लगे तो उसे अप्रत्यक्ष स्थानांतरण कहेंगे।

**(2) सार्वजनिक व्यय का वितरण पर प्रभाव**

सार्वजनिक व्यय के द्वारा धनी एवं गरीब के मध्य व आय के वितरण में व्याप्त असमानता को दूर किया जा सकता है। अमीरों पर प्रगतिशील दर से करारोपण करके उससे प्राप्त धन को गरीबों के कल्याण पर व्यय किया जाता है प्रोफ़ेसर पीगू का मत है कि "कोई भी कार्य जो गरीबों की वास्तविक आय के कुल भाग में वृद्धि करता हो सामान्यता आर्थिक कल्याण में वृद्धि करता है "समाज की बढ़ती विषमता को दूर करने का कार्य करारोपण तथा सार्वजनिक व्यय द्वारा पूरा किया जा सकता है। यद्यपि दोनों ही क्रियाएं एक दूसरे पर अवलंबित है सार्वजनिक व्यय की वह पद्धति उत्तम मानी जाती है जो आय की असमानता को कम करने की शक्तिशाली क्षमता रखती हो। प्रोफेसर डाल्टन ने करो के समान सार्वजनिक व्यय को भी प्रतिगामी अनुपातिक एवं प्रगतिशील इन श्रेणियों में विभाजित किया है।

**a) प्रतिगामी व्यय**

जिसके अंतर्गत जिन व्यक्तियों की आय कम होती है उन पर सार्वजनिक व्यय अनुपातिक रूप से कम होता है जैसे कि उच्च वेतन प्राप्त अधिकारी को निशुल्क आवास दिया जाना तथा कम वेतन वाले को ना दिया जाना तो वह प्रतिगामी यह होगा इससे आए के वितरण में समानता नहीं लाई जा सकती।

**(b) आनुपातिक व्यय**

यदि समाज में विभिन्न व्यक्तियों को उनकी आय के अनुपात में ही सार्वजनिक व्यय संबंधी लाभ दिए जाएं तो उन्हें अनुपातिक वह कहेंगे जैसे मकान भत्ता 10% सभी कर्मचारियों को दिया जाए।

**(c) प्रगतिशील व्यय**

समाज में जिस वर्ग की आय कम हो उसे उसी अनुपात में रहकर अधिक लाभ प्रदान किया जाए तो उसे प्रगतिशील व्यय कहेंगे जैसे निर्धनों के लिए निशुल्क शिक्षा,चिकित्सा पर व्यय, वृद्धावस्था पेंशन आदि प्रगतिशील व्यय के द्वारा ही आय की असमानता को दूर किया जा सकता है। निर्धन लोगों के जीवन स्तर को ऊंचा बनाया जा सकता है। अनुदान प्रगतिशील हो तथा सरकार इस ढंग से सार्वजनिक व्यय करें कि उससे निर्धन वर्ग को अधिक लाभ पहुंचे।

**(3) सार्वजनिक व्यय के अन्य प्रभाव**

**(a) सार्वजनिक व्यय का आर्थिक क्रियाओं पर प्रभाव**

आजकल सरकारों के सामने यह प्रमुख समस्या है कि देश में आर्थिक स्थिरता कैसे स्थापित की जाय ? विशेष रूप से पूंजीवादी देशों में व्यापार चक्र की भीषण प्रभाव होते है जिसके अंतर्गत आर्थिक मंदी तथा मुद्रा प्रसार की अवस्थाएं अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है तथा अर्थव्यवस्था पंगु हो जाती है। मंदी और मुद्रा प्रसार के समय सार्वजनिक व्यय की भूमिका निम्न होनी चाहिए।

**(i) मंदी के समय सार्वजनिक व्यय**

मंदी के समय कीमत गिरती है,उत्पादकों में भविष्य के प्रति निराशा रहती है जिससे उत्पादन करता है एवं बेरोजगारी फैलती है। लोगों की क्रय शक्ति घटती है एवं मांग गिरती है। यदि ऐसी स्थिति में सरकार सार्वजनिक निर्माण पर व्यय करती है तो लोगों को रोजगार मिलता है जिससे उनकी क्रय शक्ति और मांग बढ़ती है। जिसे विभिन्न वस्तुओं पर व्यय किया जाता है फल स्वरूप इन वस्तुओं का उत्पादन बढ़ता है तथा रोजगार में भी वृद्धि होती है रोजगार गुणक के माध्यम से रोजगार में कई गुना वृद्धि होती है मंदी के समय जो सार्वजनिक व्यय किया जाता है उसे क्षतिपूर्ति व्यय कहते हैं।

**(ii) मुद्रा स्फीति में सार्वजनिक व्यय**

उन्नत अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति की स्थिति रोकने में सार्वजनिक व्यय तथा राजकोषीय नीतियों का बहुत महत्व है। मुद्रा स्फीति वह स्थिति है जिसमें मुद्रा एवं साख का चलन आवश्यकता से अधिक हो जाता है और वस्तुओं के मूल्य में निरंतर वृद्धि होती रहती है। अतः सरकार को चाहिए कि स्फीतिकाल में केवल ऐसे क्षेत्र में पूंजी विनियोग करें जिनसे उत्पादन में तत्काल और यथेष्ट मात्रा में वृद्धि हो और वस्तुओं की स्वल्पता समाप्त हो जाए।

**(b) सार्वजनिक व्यय एवं रोजगार**

जब किसी देश का आर्थिक विकास इस स्तर पर पहुंच जाए कि वहां अतिरिक्त निवेश का क्षेत्र न रहे इस अवस्था को विकसित अर्थव्यवस्था कहते हैं इस दिशा में यह संभव है कि पूर्ण रोजगार न हो इस प्रकार इस अर्थव्यवस्था में व्यापार चक्रों के प्रभाव से जनित बेरोजगारी को सार्वजनिक व्यय के माध्यम से दूर करने का प्रयत्न किया जा सकता है। सरकार

सार्वजनिक निर्माण के कार्यों में वृद्धि करके, सार्वजनिक सेवाओं में वृद्धि करके यहां प्रत्यक्ष रूप से वृद्धि कर सकती है वहीं निजी उद्योगों एवं कृषि को प्रोत्साहन करके रोजगार के अवसरों में वृद्धि कर सकती है रोजगार की इस दिशा में भी तभी वृद्धि हो सकती है जबकि देश के विभिन्न आर्थिक प्रयुक्त घटकों का विदोहन सार्वजनिक व्यय के माध्यम से प्रारंभ किया जाए सार्वजनिक व्यय मूलतः उत्पादक होने चाहिए।

### (c) सार्वजनिक व्यय एवं आर्थिक विकास

वर्तमान में प्रत्येक राष्ट्र विकास कार्यों और योजनाओं में संलग्न है और यह निश्चित है कि विकास कार्यों में सार्वजनिक व्यय की अपनी विशिष्ट भूमिका है। विकासशील राष्ट्रों की मुख्य समस्या है तेजी से विकास करना है। आर्थिक विकास के संबंध में सार्वजनिक व्यय का महत्वपूर्ण स्थान है। अतः अतिरिक्त उत्पादन का बढ़ा हुआ भाग पूंजी निर्माण में लगाया जाना चाहिए जिससे अर्द्ध विकसित राष्ट्र का आर्थिक विकास तीव्रता से किया जा सके आर्थिक विकास हेतु भारी पूंजी विनियोग की आवश्यकता होती है और सार्वजनिक व्यय प्राय आर्थिक व सामाजिक मदो पर ही करना चाहिए क्योंकि -(i)लाभ प्राप्त होने में बहुत समय लग जाता है,(ii ) व्यय होने वाली राशि काफी बड़ी होती है,एवं (iii)लाभ प्राप्त होने की संभावनाएं बहुत कम हो जाती है। लोक व्यय का प्रत्यक्ष प्रभाव रोजगार के स्तर पर पड़ सकता है। देश के विकास के लिए निजी क्षेत्रों को भी विकसित किया जाना चाहिए।

## सार्वजनिक व्यय के प्रतिकूल प्रभाव

वर्तमान समय में सार्वजनिक व्यय बढ़ता ही जा रहा है और राष्ट्रों के मध्य वृद्धि की होड़ सी लगी हुई है । कभी-कभी राजकीय व्यय का प्रयोग करते समय सरकार गलती भी कर सकती है, जिससे देश की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकते हैं सार्वजनिक व्यय के निम्न प्रतिकूल प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ सकते हैं।

### (a) व्यवसाय को अनावश्यक सहायता

यदि सरकार ऐसे व्यवसाय एवं उद्योगों को संरक्षण एवं आर्थिक सहायता प्रदान करें जिनका आर्थिक विकास में विशेष महत्व नहीं है तो ऐसा सार्वजनिक व्यय बेकार चला जाएगा तथा देश में अनावश्यक उद्योगों का विकास होगा इससे उपयोगी उद्योग प्रगति करने से वंचित रह जाएंगे और अनुपयोगी उद्योग प्र गति कर जाएंगे।

### (b) स्वार्थी प्रवृत्ति

यदि सरकारी अधिकारी किसी व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण या राजनैतिक निर्वाचन क्षेत्र की जनता को खुश करने के उद्देश्य से स्थानीय कार्यों एवं विकास पर ही अधिक ध्यान दें तथा सार्वजनिक व्यय का अधिकांश भाग वहीं पर व्यय कर दे तो इस प्रकार के सार्वजनिक व्यय से अधिकतम आर्थिक कल्याण प्राप्त नहीं हो पाता अतः सार्वजनिक व्यय में स्वार्थी प्रवृत्ति आ जाने से समाज पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता है।

### (c) सुरक्षा पर अधिक व्यय

यदि सरकार द्वारा सुरक्षा पर आवश्यकता से अधिक व्यय कर दिया जाए तो उसका निर्धन वर्ग पर बुरा प्रभाव पड़ेगा वर्तमान समय में विश्व में अपनी अपनी सैनिक शक्ति का अधिकाधिक प्रदर्शन करने के उद्देश्य से प्रत्येक देश सुरक्षा कार्यों पर अधिकाधिक धन व्यय कर रहा है जिससे कल्याण कार्यों पर कम धनराशि व्यय हो पाती है ।यदि विश्व में शांति स्थापना के सफल प्रयास किए जाएं तो इस धन को विकास कार्यों में उपयोग किया जा सकता था। भारत को भी विदेशी आक्रमण के भय के कारण सुरक्षा कारणों पर भारी धनराशि व्यय कर नी होती है। नैतिक एवं मानवीय दृष्टि से सुरक्षा पर किया गया वह व्यय अमितव्ययी एवं अनावश्यक माना जाता है, परंतु देश के हित में इसे करना आवश्यक माना जाता है।

### (d) वर्ग विशेष को लाभ

यदि सार्वजनिक व्यय का अधिकांश भाग किसी वर्ग विशेष के लाभार्थ ही व्यय किया जाए तो उससे नागरिकों के कुल कल्याण में वृद्धि संभव न हो सकेगी तथा सार्वजनिक व्यय का उचित प्रभाव जनता पर नहीं पड़ेगा ।समाज दो वर्गों में विभाजित होने लगेगा तथा भविष्य में वर्ग संघर्ष की प्रवृत्ति बढ़ने लगेगी।

## निष्कर्ष

अर्थव्यवस्था की नियमन एवं नियंत्रण में सार्वजनिक व्यय की विशिष्ट भूमिका रहती है। चाहे कोई भी आर्थिक विचारधारा का सदस्य क्यों न हो इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि सार्वजनिक व्यय की गुणवत्ता उतनी ही महत्वपूर्ण है जितना कि व्यय का परिमाण सरकारों की सीमित संसाधनों को ध्यान में रखते हुए अक्षम खर्च की सीमित करना, भ्रष्टाचार से लड़ना, और सार्वजनिक व्यय की प्रभावशीलता को बढ़ाना सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन सुधार रोड मैप्स में सबसे आगे रहा है। सरकार के बजट या देश की अर्थव्यवस्था के आकार के बावजूद,एक अच्छी तरह से चलने वाली सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली नागरिकों की भलाई को सबसे आगे रखती है। सरकार की यह नीति विवेकपूर्ण,तार्किक एवं न्यायोचित है,लेकिन व्यवहार में यह हो सकता है,कि सार्वजनिक व्यय नीतियों में कुछ कमियों के कारण अर्थव्यवस्था पर इसके प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ सकते है। प्रोफेसर जे.के.मेहता के शब्दों में सार्वजनिक व्यय एक दो धार वाला अस्त्र है। यह समाज की बहुत भलाई कर सकता है,लेकिन यदि यह अबुद्धिमतापूर्ण ढंग से किया जाए, तो बहुत हानि भी पहुंचा सकता है।

## संदर्भ


1. डॉ.जे.सी. वार्ष्णेय (पेज संख्या -83,100)
2. डॉ .वी .सी सिन्हा (पेज संख्या-116,117)
3. डॉ. के. एल .गुप्ता (पेज संख्या-42,46)
4. डॉ .जी .सी .सिंगई (पेज संख्या-40,42,43)
5. डॉ विष्णु दत्त नागर (पेजसंख्या-74)
6. डॉ सुरेश चंद शर्मा (पेज संख्या -75,77)
7. https//www.gyanglow.com